नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :19.08.2020

प्रकाशनार्थ

युगपुरुष ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन दिव्य था। उन महान विभूतियों ने अपना समग्र जीवन भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय संस्कृति और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना में खपाया है। ब्रह्मलीन महाराज द्वय मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे। गुरु गोरखनाथ जिन्हे हिन्दी का आदिकवि भी कहा जाता है, उन्हीं द्वारा स्थापित भारतीय ज्ञान परम्परा का संवाहक गोरक्षपीठ आज निरन्तर मातृभाषा के विकास हेतु सचेष्ट है। संस्कृत और संस्कृति को समाज से जोडने का कार्य आज गोरक्षपीठ द्वारा संचालित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद अपना प्रधान कार्य मानती है। ब्रह्मलीन महन्त द्वय महाराज के इन्हीं प्राच्य ज्ञान–विज्ञान संवर्द्धन के इस पुनीत एवं महत्वपूर्ण कार्य को आज योगी आदित्यनाथ जी महाराज दृढ़ता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। आज का व्याख्यान उन्हीं दोनो ब्रह्मलीन पीठाधीश्वरों की पुण्य स्मृति को समर्पित है।

उक्त बातें युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 51वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की छठवीं पुण्यतिथि के पावन अवसर पर महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित सप्तदिवसीय व्याख्यान–माला के तीसरे दिन ''पाणिनीय शिक्षाशास्त्र में विज्ञान एवं गणित'' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए आई.आई.टी, कानपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. नचिकेता तिवारी ने कही।

प्रो. नचिकेता तिवारी ने कहा कि भारत की ज्ञान–परम्परा भारत ही नहीं अपितु दुनिया के मानव–समाज को समृद्ध एवं सुसंस्कृत करने में समर्थ है। शिक्षा का अभिप्राय भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में मात्र एजूकेशन नहीं है। वेदों में शिक्षा को वेदांग का अंश माना गया है। शिक्षा, वेदों के मूल उत्स एवं अभिप्राय को जानने तथा समझने के लिए अनिवार्य है। शिक्षा सहित अन्य वेदांगों यथा–निरूक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष एवं कल्प आदि के अध्ययन के बिना वेदों का ज्ञान हो ही नहीं सकता। शिक्षा का मूल अभिप्राय अक्षर विज्ञान है और महर्षि पाणिनी द्वारा रचित शिक्षाशास्त्र को अक्षरों का गर्भ कहा जाता है। संस्कृत सहित दुनियॉ की प्रत्येक भाषा की वर्णमाला पाणिनी कृत शिक्षाशास्त्र से ही निःसृत है। आज कम्प्यूटर सहित विज्ञान की कई शाखाओं में पाणिनीय व्याकरण का प्रयोग वृहद स्तर पर होने लगा है। महर्षि पाणिनी सूत्र संहिता के बड़े प्रतिष्ठित आचार्य माने जाते हैं। उन्होंने सूत्रबद्ध तरीके से अपनी गणितीय रचनाओं का प्रणयन किया। पाणिनीकृत शास्त्रों सहित भारतीय प्राच्य साहित्यों में गणित और विज्ञान विषयक जानकारियाँ बिखरी पड़ी हैं। पाणिनी के शिक्षाशास्त्र में तौल, माप, सिक्के, पण्य, द्रव्य सहित सैकड़ों शब्दों

का व्याख्यापूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। संस्कृत व्याकरण को सम्मत रूप देने के साथ–साथ ध्वनियों की गणितीय व्याख्या करने में महर्षि पाणिनी का योगदान अतुलनीय हैं।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्वियजनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का जीवन तद्‌युगीन भारतीय समाज के लिए प्रकाशपुंज की भाँति था। उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व आने वाले समाज के लिए प्रेरणादायी एवं प्रासंगिक रहेंगे। ब्रह्मलीन महन्त द्वय प्राचीन विद्या एवं ज्ञान को ही वर्तमान विज्ञान एवं तकनीक का आधार मानते थे। उनका मानना था कि यदि हमें तकनीक और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो निश्चित रूप से आधुनिक प्रयोगों और अन्वेषणों के साथ अपने प्राच्य विद्या और ज्ञान से प्ररेणा लेते रहना होगा। हमारे वेद हमारे शास्त्र, उपनिषद, आरण्यक, सूत्र संहिताएं नाना प्रकार की तकनीक एवं ज्ञान–विज्ञान से पूर्णतः परिवेष्ठित हैं। 19वीं–20वीं शताब्दी में होने वाले तमाम वैज्ञानिक शोधों एवं आविष्कारों ने यह प्रमाणित कर दिया कि भविष्य में होने वाले आविष्कारों का बीज सूत्र कहीं न कहीं हमारे प्राचीन संहिताओं में समाहित है।

डॉ. राव ने आगे कहा कि विश्व में गणितीय गवेषणा का आरम्भ ही भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ था। संख्या, शून्य, स्थानीय मान, अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति आदि का प्रारम्भिक कार्य भारत में ही सम्पन्न हुआ। गणित एवं विज्ञान के बिना तकनीकि शिक्षा की कोई भी शाखा पूर्ण नहीं हो सकती है। भारत ने विश्व में औद्योगिक क्रांति के लिए न केवल भौतिक रूप से आर्थिक पूंजी प्रदान की, वरन् बौद्धिक विकास के लिए विज्ञान की नींव को जीवन्त तत्व भी प्रदान किया जिसके फलस्वरूप मानवता विज्ञान और उच्च तकनीकि के इस आधुनिक दौर में प्रवेश कर पायी। इसके पूर्व महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग की प्रभारी मनीता सिंह ने व्याख्यान कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. नचिकेता तिवारी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान माला के संयोजक सुबोध मिश्र ने किया। महाविद्यालय के फेसबुक और यू–ट्यूब चैनल पर बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी और श्रोतागणों ने व्याख्यान में अपनी सक्रिय उपस्थित दर्ज करायी।

(सुबोध कुमार मिश्रा)
संयोजक
सप्तदिवसीय व्याख्यान माला